

which is considered the best aspect of society. It is also said in Muslim society that man is made of clay and even after going to the grave, he joins the clay. The same thing happens in Christianity that after death, the person is buried in the soil and, in Hindu society, when the person who dies is burnt he also turns into ashes and mixed into the soil.

(C) Socio-cultural and political factors: Big Industries, Big Malls, increasing markets and Industrial complex presents a beautiful example. It shows how a combination of social, cultural, historical and political factors have led to the rapid growth of population and density of this complex. The presented research paper aims to analyze the geographical location of Kanth Tehsil. Its purpose is to show population, social work, cultural activities and literacy. The relationship between cultural landscape change and population growth in tehsil kanth has been shown in the presented research paper.

Literacy: It is necessary to be literate and literacy is an important means of becoming powerful. The more literate the population is, the more people can participate in the knowledge-based economy. In addition, literacy increases health awareness among people and increases participation of community members in cultural and economic welfare activities. Talking about the present time, two-thirds of our population is now literate, yet the literacy rate is struggling to keep up with India's population growth rate as our population growth rate still remains quite high.(5)

Conclusion: In conclusion, it has been found that all the approaches of population geography study are not competitive with each other but are complementary. A systematic approach involving traditional analysis techniques is helpful in clarifying the regional pattern of various characteristics of the population. Population migration and growth rate can be divided into different categories. Migration can be divided into permanent or temporary categories. On the basis of the place from where migration occurs and the place to which migration occurs. The migrant population is classified into village to village, rural to city and city to rural areas. Through the presented research paper, the relationship between change in the current cultural scenario and population growth has been presented.

References

1. Ministry of India Population C.D Census 2011, Moradabad District.
2. Clarke, J.I. (1989), 'Population and Disaster', ed- by Nag Basil block well, Oxford Earth Evam Sankhyadhikari.p79
3. Kendrew, W.G., (1941) Climate of the Continents, London,p149
4. Krishnan, M.S (1948), 'Geology of India and Burma', p-511
5. Mamoria, Chaturbhuj (2003), 'Bhartiya Samaj Shastra', Sahitya Bhawan Agra, p-85.
6. Masik Patrika of Moradabad District 2023

शेखर जोशी की कहानियों में साहित्यिक सामाजिक अनुशीलन

नवीन नाथ

शोधार्थी

मो0 8193821884, 9258379184

शोध सारांश- साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज के सुख-दुःख और आशा-निराशा सभी क्रिया- कलाप साहित्यकार से सम्बद्ध होते हैं। संपूर्ण समाज का अनुशीलन करना ही साहित्यकार का परम उद्देश्य होता है। इसी क्रम में दिखाई पड़ते हैं-शेखर जोशी। उन्होंने मध्य और निम्न वर्ग की जटिलताओं को अपनी कहानियों का प्रमुख विषय बनाया है। विविध सामाजिक संदर्भों के प्रति उनका गहन संबंध रहा है, जो उनकी कहानियों में विशेष दिखायी देता है।

मूल शब्द- युगीन समाज, मध्य तथा निम्नवर्ग, पारिवारिक विघटन, नारी चित्रण, गरीबी, पूंजीवाद एवं वर्ग -संघर्ष, जन-जीवन प्रताड़िता।

कोई भी साहित्यकार अपने युगीन समाज से प्रभावित होकर ही उसके प्रति गहन संवेदना व्यक्त करता है। वह समाज की विभिन्न तत्कालीन परिस्थितियों से होकर गुजरता है। इसी प्रकार शेखर जोशी ने समाज में रहकर गहन लेखनी चलाई है। पहाड़ी जीवन और उसके साथ कठिन परिस्थितियों सदैव ही उनके जन-जीवन को विवश करती रही। पर पहाड़ की कठिन परिस्थितियों के कारण लोग मैदानों को पलायन करते हैं। कहानीकार शेखर जोशी ने पहाड़ी जन-जीवन को कठिनाइयों से देखा है: "सच बात तो यह है कि एक अरसे तक सुदूर पिछड़े पहाड़ी गांव की सीमित दुनिया में रहने के बाद अचानक ही एक नई और हलचल भरी दुनिया से हमारा साक्षात्कार हो गया था। गांव से निकट पढ़ने लिखने की सुविधा न होने के कारण अधिकांश लड़के कोई न कोई सहारा थामकर शहरों में पढ़ने के लिए जाते थे।"¹

शेखर जोशी अपनी सामाजिक चेतना की समझ गहन सूझ-बूझ के साथ करते हैं। समाज का निम्न वर्ग भी कहानी का नायक बन जाता है। उन्होंने 'दाज्यू' कहानी में इसका चित्रण बारीकी से पकड़ा है: "मदन को जगदीश बाबू के व्यवहार से गहरी चोट लगी। मैनेजर से सिरदर्द का बहाना बनाकर वेह घटनों में सर दे कोठरी में सिसकियां भर-भर रोता रहा। घर गांव से दूर, ऐसी परिस्थिति में मदन का जगदीश बाबू के प्रति आत्मीयता प्रदर्शन स्वाभाविक ही था। इसी कारण आज प्रवासी जीवन में पहली बार उसे लगा जैसे किसी ने ईजा की गोदी से, बाबा की बांहों से, और दीदी के आंचल की छाया से बलपूर्वक खींच लिया हो।"²

मध्यवर्ग सामाजिक स्तर पर उसी रूप में प्रस्तुत होता है, जिस रूप में उसकी मानसिकता प्रकट होती है। इसी क्रम में दाज्यू शेखर जोशी की प्रथम कहानियों में से एक है। यह कहानी झठी मर्यादा को परत- दर - परत उघाड़ती है। कहानी की शुरुआत पहाड़ी क्षेत्र के बालक मदन, जो एक होटल में काम करता है, से शुरू होती है। अल्मोड़ा जनपद में जगदीश बाबू से उसका परिचय होता है। जगदीश बाबू के टेबल पर बैठते ही मदन का स्वर सुनायी देता है: "दाज्यू जैहिन्ने! दाज्यू आज तो बहुत ठण्ड है! दाज्यू क्या यहां भी ह्यू (हिम) पड़ेगा।"³

परिवर्तन प्रकृति का नियम है जो हमारे सामाजिक ढाँचे में भी बदलाव करते आया है। इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि "सुनो बृजलाल, तुम सोचते हो शीशमहल में ही पैदा हुआ था यह तुम्हारी भूल है। मेरा बाप भी तरखान था अपने गांव जवार का माना हुआ तरखान। पचास-पचास कोस दूर से लोग उनसे काम करवाते थे। मेरे माथे का यह निशान देख रहे हो? रंदा लगाते हुए बाल भर चल रह गई थी। मैं भी कारीगर और कारीगर की कद्र करता हूँ, लेकिन मेरी भी मजबूरियां हैं,

मुझे भी तकादे झेलने पड़ते हैं।”⁴पहाड़ी समाज के अंतर्गत कथाकार शेखर जोशी ने उस दशा का चित्रण भी किया है जो परिवार के भीतर देवरानी-जेठानी की मनोदशा का चित्रण भी करती हैं: “घर का कारोबार देवरानी के हाथों में सौंपकर जेठी बहू भुवन के साथ चल दी। रामदत्त स्टेशन जिन्हें लेने अया था। देवर के घर पहुँचकर जेठी बहू को लगा जैसे देवरानी को भुवन से कहीं ज्यादा स्वयं उसकी प्रतीक्षा रही हो। अपनी इस देवरानी का ऐसा व्यवहार उसके लिए आश्चर्य का कारण बन गया।”⁵

इस प्रकार शेखर जोशी ने परिवार के संबंधों पर भी अपनी संवेदनाएं व्यक्त की हैं। शुभ कार्य के अवसर पर शब्दों के पहले और बाद में होने वाले मांगलिक कार्य पर प्रशंसा करते हुए उन्होंने लिखा है: “यह एक विचित्र संयोग था कि बरात प्रस्थान के ठीक एक दिन पहले अलग-अलग स्थानों से परिवार और बिरादरी के कई लोग इस शुभ कार्य की शोभा बढ़ाने के लिए आ पहुंचे। शाम को पहुँचने वाली गाड़ी में मेहमानों का एक दल पहुँचा और उसके आगमन की खुशी में हरिप्रिया देवस्थान में जाकर शंखध्वनि करती कि घंटे-घंटे बाद दूसरा दल पहुँच जाता और शंखध्वनि होती, जीवन के पैर धरती पर नहीं टिक रहे थे वह छल-छलाई आंखों और भरे गले से उनका स्वागत कर रहा था, और बार-बार दोहराया जाता था कि उसे विश्वास था कि वे लोग आएंगे और उसके बेटे की बरात अपने खानदान की मान मर्यादा के अनुकूल ही सजेगी।”⁶

प्रसिद्ध कथाकार शेखर जोशी ने समाज के विभिन्न पहलुओं पर अपनी लेखनी चलाई है। वे विपरीत परिस्थितियों के अंतर्गत नारी के स्वरूप को स्पष्ट करते हैं। लक्ष्य के आत्म संवेदना को, मजबूरियों को कथाकार ने सामने प्रस्तुत किया है: “मुश्किल पड़ने पर कोई किसी का नहीं होता जी। बाबा की जायदाद पर उनकी आंखें लगी हैं, सोचते हैं। कहीं मैं हक न जमा लूं, मैंने साफ-साफ कह दिया, मुझे किसी का कुछ लेना-देना नहीं। जंगलात का लीसा ढो-ढोकर अपनी गुजर बसर कर लूंगी, किसी की आंखों का कांटा बनकर नहीं रहूंगी।”⁷

उत्तराखण्ड हिमालयी राज्य है उसकी मान्यताएं भी प्राचीन हैं। फिर किसी भी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था वहाँ की भौगोलिक प्राकृतिक साधनों पर निर्भर रहती है। यहाँ का भौगोलिक वातावरण विषम है, जहाँ कृषि योग्य भूमि का निरंतर अभाव रहा है। आजीविका के लिए लोग पलायन करते हैं। यही कारण है कि “गांव में धीरे-धीरे पुरानी पीढ़ी के बुजुर्गों में से एक के बाद एक किसी पेड़ के पीले पत्तों की तरह समाप्त होते गए थे। नयी पीढ़ी के लड़के पढ़-लिखकर नौकरी और रोजगार के बहाने एक बार प्रदेश की ओर गए तो अपनी गृहस्थी और बाल बच्चों के साथ वहीं के होकर रह गए।”⁸

सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियां किस प्रकार मनुष्य को प्रभावित करती हैं, उसका चित्रण लछमा की दयनीय स्थिति को देखकर हुआ है: “ऐसे ही खाने-पीने की तकदीर लेकर पैदा हुआ होता तो मेरे भाग में क्यों पड़ता; दो दिन से घर में तेल नमक नहीं है। आज थोड़े पैसे मिले हैं, आज ले जाएंगी कुछ सौदा।”⁹

इन सब विचारों से ज्ञात होता है कि गरीबी में जीवन बिता रही लछमा का जीवन करूणा भर था: “कभी चार पैसे जुड़ जाएं तो गंगनाथ का जागर लगाकर भूल-चूक की माफी मांग लेना। पूरे परिवार वालों को देवी-देवताओं के कोप से बच रहना चाहिए।”¹⁰

पूजावादी व्यवस्था ने समाज को दो वर्गों में विभाजित किया- एक पूजापति, दूसरा श्रमिक। वैसे देखा जाए तो समाज में दुःख दर्द, भ्रष्टाचार को साझा करते हुए उन्होंने लिखा है: “जिंदगी की दौड़ में कई उतार-चढ़ाव आए। मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग कारखानों में बीता है, जहाँ तेल और कालिख से सने कपड़ों में ऐसी स्थितियां छिपी थीं जिन्होंने मेरी जिंदगी को एक नया अर्थ दे दिया। यह मेरा एक नया आत्मिक संचार

बन गया।”¹¹

शेखर जोशी की कहानियों में मजदूर वर्ग अपने अधिकारों के लिए दिखाई पड़ते हैं। निम्न मजदूर वर्ग अशिक्षित होता है। वे अपने हित के लिए विकसित नहीं हो पाते हैं। यही कारण है कि मजदूरों का शोषण हर स्तर पर होता है: “गेट से बाहर निकलकर उसने अनुभव किया जैसे बंद कोठरी से निकलकर खुली हवा में चला आया हो।”¹²

सामाजिक जीवन साहित्य की अमूल्य प्रतिनिधि होती है। शेखर जोशी का संबंध पर्वतीय क्षेत्र से रहा है। पहाड़ी बाटों की झलक उनकी कहानियों में मिलती है: “चीड़ की पतली पत्तियों से रास्ता ढुका हुआ था, असावधानी से चलने पर कभी-कभी पांव फिसल जाते थे। यों उस मौसम में सभी रास्ते की यही दशा रहती है, आते समय गणनाथ की उतराई में भी हमें बहुत संभलकर आना पड़ा था, परंतु इस बार थोड़ा-सा भी पांव फिसलने पर दादा विचित्र स्वर में बड़बड़ा उठते थे।”¹³

गांव में पहाड़ी नारी जीवन का स्वरूप अलग होता है। जंगलों में घास काटना, बेहद पारिश्रमिक कार्य है। आर्थिक चित्रण भी उसका एक हिस्सा है, इसका वर्णन शेखर जोशी ने यों ही किया है: “अब गांव के निकट पहाड़ियों के ऊपर भी धुंधलका छाने लगा था। सिर पर लकड़ी का छोटा सा गड्ढर संभाले, कमर में घाघरे की फेंट में दराती खोंसे, लाठी टेकती हुई आमा ने घर के निकट पहुँचकर सर्रुली चली! आवाज दी तो रवि की एकाग्रता भंग हुई और उसने अपनी परिस्थिति का एहसास कराने के लिए ही जैसे आमा के सम्मुख आकर राम-राम कहा।”¹⁴

वस्तुतः शेखर जोशी के जनजीवन में आर्थिक तंगी के चलते, पहाड़ के ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर चलना कितना दयनीय होता है, इसका बखूबी चित्रण लेखक ने किया है: “तेज हवा चलने लगी थी, वातावरण में चीड़ के पत्ते की सांय-सांय की अपेक्षा अन्य कोई स्वर नहीं सुनाई दे रहा था, दर तलहटी में गांव के निकट बांज के पत्ते उलट-उलटकर अपनी सफेद हथेलियां चमका रहे थे।”¹⁵

निष्कर्ष: इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शेखर जोशी का संबंध विशेषकर हिमालयी राज्य उत्तराखण्ड से रहा है, जो उनकी लेखनी में रची बसी है। अपनी कहानियों के माध्यम से उन्होंने पहाड़ी समाज के जन-जीवन का उथल-पुथल कर दिया है। पहाड़ी आंचल के बिंब-सौंदर्य को सिमोरने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

संदर्भ:-

1. आदमी डर, रंगरूट, शेखर जोशी पृ० 16, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।
2. मेरा पहाड़, दाज्यू कहानी, शेखर जोशी पृ० 12, रेमाधव पब्लिकेशन्स, गाजियाबाद, 2008
3. वही, पृ० 11
4. डांगरी वाले, शेखर जोशी, पृ० 42, आधार प्रकाशन, हरियाणा, संस्करण 1994
5. वही, पृ० 71-72 भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।
6. मेरा पहाड़, शेखर जोशी, पृ० 78
7. वही, पृ० 68
8. प्रतिनिधि कहानियां, शेखर जोशी, पृ० 54, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2018
9. मेरा पहाड़, शेखर जोशी, पृ० 71
10. वही, पृ० 73
11. डांगरी वाले, शेखर जोशी, पृ० 10-11
12. वही, पृ० 46
13. आदमी का डर, शेखर जोशी, पृ० 47
14. प्रतिनिधि कहानियां, शेखर जोशी, पृ० 63
15. आदमी का डर, शेखर जोशी, पृ० 52